[Conference-Composition of Colours :December,2014] ISSN- 2350-0530
DOI: https://doi.org/10.29121/granthaalayah.v2.i3SE.2014.3676
INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

"समकालीन महिला चित्रकार अर्पिता बसु के चित्रों मे रंग एंव प्रकृति" (पर्यावरण के संदर्भ में)

डॉ. कुमकुम भारद्वाज
परविन्दर राठौर – शौधार्थी
शा. महारानी लक्ष्मीबाई स्नातकोत्तर कन्या महाविद्यालय किला भवन इंदौर

मानव जीवन की भांति रंग एंव प्रकृति के उद्रय का इतिहास भी बडा रहस्यमय ओर विराट है मनुष्य ने जिस समय प्रकृति की गोद मे अपनी ऑख खोली उस समय से ही उसने प्रकृति को रंगो के साथ में देखा । रंग एंव प्रकृति के बीना जीवन की कल्पना नहीं की जा सकती है।

सष्ट्रि के निर्माण के साथ ही रंग एंव प्रकृति का अटूट संबंध रहा है। रंगो के बिना प्रकृति तथा प्रकृति के बिना रंगो की कल्पना नहीं की जा सकती है सष्ट्रि में उपस्थित प्रत्येक प्रकृति वस्तु जैसे :– पेड – पौधे ,पषु – पक्षी, जीव – जन्तु ,नदी ,पहाड ,अग्नि ,जल, आकाष आदि सभी एक निषचित स्वरुप के साथ रंग लिए होते है
सष्ट्रि में विद्रमान प्रत्येक जैविक एंव अजैविक वस्तुओं से कालान्तर में विभिन्न आवष्यकता की , मनोरंजक, एंव अविष्कारक प्रयोग किये तथा विभिन्न वस्तुओं का निर्माण किया । मनोरंजन के साधनों के रुप में विभिन्न प्रकृतिक वस्तुओं का उपयोग संगीत यंत्र, चित्रकला में कागज, कपडा ,तुलिका ,रंग सभी प्रकृतिक वस्तुओं से निर्मित किये जाते है तथा चित्रकरो के चित्रो एंव रंगो की प्रेरणा प्रकृति ही होती है। संसार में उपस्थित प्रत्येक द्रष्य को देख कर उसे चित्रित करना प्रंराभ किया तथा इन चित्रो को रंगने के लिए रेग प्रकृति से प्राप्त वस्तुओं से बनाए रंग मानव जीवन को मानसिक एंव भौतिक रुप से प्रभावित करता हैं क्योंकि प्रत्येक रंग की अपनी एक प्रकृति होती हैं
अर्पिता बसु का जन्म सन् 1964 में त्रिपुरा कलकत्ता में हुआ इन्होने एम. बी. ए. रविन्द्रभारती विष्वविधालय कलकत्ता से 1992 में प्राप्त की। समकालीन महिला चित्रकार अर्पिता बसु के चित्रों मे रंग एंव प्रकृति का अद्रभूत संयोजन देखने को मिलता है अर्पिता का पंसदिता रंग जलरंग है इनके प्रारंभिक कार्य सिल्क पर मिलते है परन्तु इन्होने अचानक हाथ से बने कागज पर चित्रण करना प्रारभ किया इन्होने चावल की भूसी से कागज का निर्माण किया तथा प्रकृति पृष्टभूमि पर चित्रण कार्य किया अर्पिता ने अपने चित्रो में बंगाल की जीवन षैली ,परंपरा, संस्कृति तथा प्रकृति को चित्रित किया है
तीन षताब्दी पूंव बंगााल की महिलाएॅ ष्याम को एक्त्रित होकर पुरानी साडी पर कढाई करके नरम रजाई बनाती थी जिसे कन्था कहते हैं। इसमें महिलाए साडी की किनार और रंगीन धागे निकाल लेती थी तथा इन रंगीन धागो का उपयोग कन्था को संजाने में करती थी तत्पष्चात महिलाओं ने कन्था को कागज तथा केनवास पर रंगो द्वारा चित्रिण करना प्रारम्भ किया। इसमें प्रकृति वस्तु जैसे पेड– पौधे,पषु –पक्षी, जीव–जन्तु,नदी ,पहाड, अग्नि ,जल, आकाष तथा मानव जीवन को चित्रित किया हैं कई चित्रों के विषय जिसमें अंग्रेजो को धोडो के साथ, साहिब को षिकार करते तथा महिला को पालकी में जाते चित्रित किया हैं वर्तमान समय में बंगाल की कन्था पारम्परिक कला लोकप्रिय कला हैं कन्था बंगाल के आज के समय के समाजिक परिवेष को प्रदर्षित करता हैं अर्पिता ने अपने चित्रो को कन्था ष्षैली में बनाया हैं उनके चित्र बंगाल के प्रत्येक दिन के जीवन और सामाजिक जीवन षैली को चित्रित किया हैं

अर्पिता बसु के कई चित्रों में रंग एंव प्रकृति का संबंध देखने को मिलता हैं उपरोक्त षोधलेख में उनके कुछ चित्रो को वर्णित किया गया हैं

पिंजरा

अर्पिता बसु के " पिंजरा " नामक चित्र में दो पुरुष आकृतियों को पिंजरों में बंद पक्षीयों के साथ चित्रित किया हैं तथा आकाष में उडते स्वंतत्र पक्षीयों को चित्रित किया हैं इस चित्र में कलाकार ने रंगो एंव प्रकृति के द्वारा पिंजरों में कैंद पक्षीयों की भावनाओं को व्यक्त करने में सफल होई है ं इस चित्र में पक्षीयों को चटक रेगों के साथ चित्रित किया तथा मध्यम धूसर रंग का प्रयोग पिंजरेा मे कैंद पक्षीयों की अरुचि कों व्यक्त करती है तथा अंधकारपूर्ण तान उनकी उदासीनता को व्यक्त करती हैं चित्र में ऊपर उन्मूक्त नीले रंग के आकाष मे स्वतंत्र उडते दिखाया गया है। इस चित्र के माध्यम से चित्रकार ने स्वतंत्रता का संदेष दिया है।

INTERNATIONAL JOURNAL of RESEARCH –GRANTHAALAYAH
A knowledge Repository
Art

यात्रा

द्वितिय चित्र " यात्रा " मे पक्षीयों की यात्रा के माध्यम से बंगााल की गलीयों की सैर कर सकते हैं गलीयों मे खेलते बच्चे ओर मकानो की छतों पर दैनिक काम करती महिला –पुरुष को चित्रित किया गया है चित्र में खुले आकाष के नीचे ˙एक पुरुष आकृति को नींद मे चित्रित किया है।जिसके समीप कौओ को दाना चुगते चित्रित किया हैं इस चित्र में प्रत्येक घर के पास एक पेड चित्रित किया गया हैं चित्र में रंग योजना बहूत ही आकृर्षक है। चित्र में हल्के रंगो के प्रयोंग से देखने वाले की आखो को सूखद अनुभूति देता हैं ।

पंतग की कहानी

तृतिय चित्र " पंतग की कहानी " पर श्रंखलाबद्ध चित्रिण कार्य किया गया हैं इन चित्रो मे बचपन को विभिन्न रुपों में चित्रित किया हैं चित्र में नारगी पृष्टभूमि पर सफेद नीले आकाष को चित्रित किया गया है। जिस पर बालक – बालिका को पंतग के साथ में चित्रित किया गया हैं इस चित्र के माध्यम से बच्चों के खुले आकाष में पंतग उडाने के आन्नद को अर्पिता बसुजी ने व्यक्त किया हैं इस श्रंखला मे पंतग पर कई चित्र बनाए गये हैं जिनमे बच्चो की खूषी ,उत्साह को अलग अलग रंगो के माध्यम से व्यक्त किया है।

स्पिनिग काम्पीटिषन

चतुर्थ चित्र " स्पिनिग " काम्पीटिषन नामक चित्र प्रत्येक व्यक्ति के बचपन को याद दिलाता हैं चित्र में दो बालको को लट्टू के साथ में चित्रित किया गया है जिसे बालक रस्सी की सहायता से घुमाते हूए चित्रित किये गये हैं चित्र में हल्के रंग की पृष्टभूमि बनाई गई है जिससे चित्र अत्यधिक सुन्दर दिखता है। लट्टू जहॉ एक ओर प्रकृतिक जीवन चक्र को प्रदषित करता है वही बचपन मे खेले जाने वाले एक मामूली खेल को भी व्यक्त करता हैं ।

अर्पिता बसु के समस्त चित्रों का विषय सामाजिक जीवन पर आधारित होते हैं जिसमें प्रकृति को संजोने का संदेष दिया गया है अर्पिता बसु के चित्रो मे रंग हल्के तथा चटक लिए हुए हैं चित्र के रंग मन को षांति तथा आन्नद प्रदान करने के साथ पर्यावरण को बचाने का संदेष देती हैं जो मानव मन पर अमिट छाप छोडते है अर्पिताजी ने अपने चित्रो मे रंग एंव प्रकृति को जीवन के साथ में चित्रित करने मे सफलता प्राप्त की हैं ।

संर्दभित ग्रंथ सूचि

ग्रंथ	*लेखक*
ऑट इंडिया	
कला एंव तकनीक	*अविनाष बहादुर वर्मा*
चित्रकला के मूलाधार	*डा षुक्रदेव श्रोत्रिय*